संस्कृत काव्यशास्त्र में अलंकार प्रयोग का औचित्य

आलोक कुमार यादव

भारतीय काव्यशास्त्र में काव्यशास्त्रीय तत्त्वों का बहुत महत्त्व है। भारतीय काव्यशास्त्र का आधार स्तम्भ काव्यशास्त्रीय तत्त्व ही हैं। काव्यशास्त्रीय तत्त्वों में रस, छन्द, अलंकार, ध्वनि आदि का परिगणन मुख्य रूप से किया जाता है। इन तत्त्वों में अलंकार का मुख्य स्थान है। वस्तुतः अलंकार सौन्दर्य वर्धक साधन के रूप में प्रयुक्त होता है। काव्य में इनका प्रयोग भावों को उदात्त बनाने तथा रमणीयता प्रदान करने के लिये किया जाता है। इनके प्रयोग से अभिव्यक्ति में स्पष्टता एवं भावों में प्रभावत्मकता आ जाती है। अल{ार का अर्थ दो प्रकार से किया जाता है– (1) अलङ्क्रियते अनेन इति अलंकारः अर्थात् काव्य जिसके द्वारा अल{ृत होता है अथवा काव्य में शोभा के आधायक तत्त्व होते हैं। (2) अलङ्क्रियते इति अलंकारः अर्थात् जो अलङ्कृत होता है अथवा काव्य की शोभा। यहाँ एक के द्वारा संकुचित अर्थ का बोध होता है तथा दूसरे के द्वारा व्यापक अर्थ का बोध होता है।